हिन्दी - पुष्प

(साउथ एशिया टाइम्स का हिन्दी परिशिष्ट)

वर्ष-६ अङ्क-२ सितम्बर, २००९

सम्पादकीय

हिन्दी-दिवस

भारत तथा अन्य देशों में जहाँ हिन्दी-प्रेमी रहते हैं, १४ सितम्बर हिन्दी-दिवस के रूप में मनाया जाता है। इस दिन, बहुधा नेतागण हिन्दी के महत्व पर भाषण देते हैं और हिन्दी को इसका उपयुक्त स्थान दिलाने का वायदा करते हैं परन्तु दुर्भाग्यवश, हिन्दी की स्थिति में कोई परिवर्तन नहीं होता है। भारत में आज भी हिन्दी के साथ सौतेली माँ जैसा व्यवहार किया जा रहा है। भारतीय संविधान में हिन्दी को राजभाषा का स्थान दिये जाने के बावजूद, देश का अधिकांश सरकारी काम-काज आज भी अँग्रेज़ी में होता है। स्मरणीय है कि भारत की केवल दो प्रतिशत जनता, अँग्रेज़ी जानती है जब कि अधिकांश लोग हिन्दी जानते हैं। २००१ में की गई जनगणना के अनुसार, भारत में ४१ प्रतिशत लोग हिन्दी-भाषी हैं। अन्य भाषाओं में सबसे अधिक बंगाली-भाषी (८ प्रतिशत) हैं, शेष भाषाएँ बोलने वालों की सख्या ८ प्रतिशत से भी कम है। ऐसी स्थिति में आम जनता पर हिन्दी के स्थान पर अँग्रेज़ी का लादा जाना समझ में नहीं आता है। स्वतंत्रता आन्दोलन के दौरान, चरखे की भाँति, हिन्दी भी इस आंदोलन से जुड़ी थी और भारत के विभिन्न प्रदेशों के लोगों ने हिन्दी के प्रचार-प्रसार में सहयोग दिया था। क्या आप सोच सकते हैं कि चीन, जापान, जर्मनी अथवा अन्य किसी देश में अपने देश की भाषा छोड़ सरकारी काम-काज किसी विदेशी भाषा में होता होगा? केवल भारत में ही ऐसा हो सकता है। परन्तु हिन्दी जन-भाषा है, सरकारी समर्थन मिले या न मिले, यह भाषा फलती-फूलती रहेगी। इस महीने हिन्दी-दिवस के अतिरिक्त, पितृ-दिवस और शिक्षक-दिवस भी हैं। सभी शिक्षकों, पिताओं को और सभी पाठकों को इन दिवसों की बधाई। मुसलमान भाई-बहनों व उनके परिवारों को ईद-मुबारक। हिन्दी के प्रचार-प्रसार में आप सबका योगदान बहुत आवश्यक है।

हिन्दी-पुष्प के इस अङ्क में काव्य-कुंज में हिन्दी-दिवस तथा बाल-मजदूरी आदि अन्य विषयों पर कुछ रोचक कविताएँ हैं, मेल्बर्न में 'साहित्य-संध्या' के साथ मनाये गये 'हिन्दी-दिवस' पर एक रिपोर्ट तथा एक लघु-कथा हैं। साथ में 'अब हँसने की बारी है' तथा सूचनाएँ भी हैं। आशा है आपको यह अङ्क पसंद आएगा। आपके विचारों, सुझावों तथा रचनाओं का हम स्वागत करेंगे।

-दिनेश श्रीवास्तव

लेखकों से निवेदन

१. कृपया अपनी रचनाएँ (कहानियाँ, कविताएँ, लेख, चुटकुले, मनोरंजक अनुभव आदि) निम्नलिखित पते पर भेजें -

डा० दिनेश श्रीवास्तव, १४१ हायट स्ट्रीट. रिचमंड, विक्टोरिया ३१२१

(Dr. Dinesh Srivastava, 141 Highett Street, Richmond, Victoria 3121)

२. हस्तलिखित रचनाएँ स्वीकार की जाएँगी परन्तु इलेक्ट्रानिक रूप से हिन्दी-संस्कृत फ़ांट मे रचनाएँ भेजे तो उनका प्रकाशन हमारे लिए अधिक सुविधाजनक होगा।

ई-मेल से रचनाएँ भेजने का पता है-

dsrivastava@optusnet.com.au

३. अपनी रचनाएँ भेजते समय अपनी रचना की एक प्रतिलिपि अपने पास अवश्य रखे।

काव्य-कुंज

हिन्दी दिवस मनाने आए हैं

- सुभाष शर्मा, मेल्बर्न

हिन्दी माँ के चरणों में
हम पुष्प चढ़ाने आए हैं
आज सभी मिल कर
हम हिन्दी दिवस मनाने आए हैं

माँ तेरे प्रताप से ही
हम ज्ञान ध्यान सब पाए हैं
तेरे ही प्रताप से माँ
हम दूर-दूर तक छाए हैं
भिन्न-भिन्न भाषाएँ भी
माँ तुझ से हम सीख पाये हैं

तेरे ही चरणों में माँ
हम ध्यान लगाने आए हैं

वेद शास्त्र विज्ञान-ज्ञान
सब तूने ही सिखलाए हैं
तुझ से ही इतिहास और भूगोल भी
हम सीख पाए हैं
तेरी किरपा से तारों से बातें भी
हम कर पाए हैं
आज सभी मिल कर
हम हिन्दी दिवस मनाने आए हैं

जननी जन्म भूमि मर्यादा
तू सब की परिभाषा है
तू ही है अस्तित्व मेरा
तू ही मेरी अभिलाषा है
धारण कर आशीष धरा पर
नाम तेरा कर पाए हैं
आज सभी मिल कर
हम हिन्दी दिवस मनाने आए हैं

तेरे चरणों की रज लेकर
दूर देश तक आए हैं
तेरे ही चरणों को छूने
आज यहाँ सब आए हैं
तेरे ही गौरव से गौरव
धरती पर हम पाए हैं
आज सभी मिल कर
हम हिन्दी दिवस मनाने आए हैं

दर्शन और विज्ञान धरा पर
तेरे बिना अधूरे हैं
ध्यान धरे मन में तेरा तो
वेद-शास्त्र सब पूरे हैं
हिन्दी माँ के गीत सभी
हम मिल कर गाने आए हैं

आज सभी मिल कर
हम हिन्दी दिवस मनाने आए हैं
हिन्दी माँ के चरणों में
हम शीष झुकाने आए है

पतझड़

-हरिहर झा, मेल्बर्न

आँसू में डूबी वीणा ले,
मैं मधुर गति कैसे गाता
बचपन मेरा सूखा पतझड़,
हरियाली मैं कैसे लाता

खेल-कूद सब बेच दिया
बस दो पैसों के ख़ातिर
बहा पसीना थका खून,
खाने को तरस गया
गिरवी रख कर बचपन,
मज़दूरी से जोड़ा नाता

शाला कैसे जा पाता
जब रूठा हाय विधाता!
तरस गया देह ढँकने को,
यूनिफ़ार्म कहाँ से लाता
बचपन मेरा सूखा पतझड़,
हरियाली मैं कैसे लाता

बस्ता लिये चला स्कूल मैं,
सपना ऐसा देखा
स्वर्ण-पदक सी चमकी अरे,
भाग्य की रेखा
दिन भर शरीर झुलसाने के
झगड़े हो गये दूर
भोंपू बजा कान में,
मेरे सपने हो गये चूर
कैसे भूखा रह कर,
खर्चा फ़ीस किताबों का दे पाता
बचपन मेरा सूखा पतझड़,
हरियाली मैं कैसे लाता

किस्मत ऐसी कहाँ कि हँस कर
किलाकारी मैं भरता
रोज़ बाप की गाली खा कर
पिट जाने से डरता
कैसे अपने आँसू पोछूँ,
नरक बना यह जीवन
गुमसुम सोच न पाता
कैसे दुख झेले यह तन-मन
माँ बूढ़ी बीमार खाट पर
उसे खिलाता, क्या मैं खाता
बचपन मेरा सूखा पतझड़,
हरियाली मैं कैसे लाता

कलयुग की बलिहारी

- सुभाष शर्मा, मेल्बर्न

कलयुग की देखो
आज कैसी बलिहारी प्रभु
कल युगी नारी कल युगी कहलाती है
पहले जो बात करने से कतराती थी
आज सेल फ़ोन पर कैसी बतियाती है

पहले जो आगरा का घाघरा दिखाती थी
आज वही वागरा के पीछे भागी जाती है
पहले जो लहँगा जोर डार के बनाती थी
आज वही लहँगा ज़ोरदार पहन आती है

पान खाय पीक मारे,
धरती को लाल करे
आज दिन रात वही च्युंगम चबाती है
पहले जो नारी किलकारी से रिझाती थी
आज वही नारी कलाकार कहलाती है

पहले जो छोरों के बीच
नहीं जाती थी
आज वही छोरों को 'बीच'
लेके जाती है
पेन्सिल की हील डाली
हंसिनी की चाल वाली
कोयल की कंठी
सेल्स गर्ल कह लाती है

नारी या बिचारी कहें
इनकी लाचारी कहें
इनकी ही बात
खूब सोची और बिचारी है
कहें कवि देसी,
परदेसी की कहूँ मैं क्या
अपने ही घर में ये फैली बीमारी है।

मेल्बर्न में साहित्य-संध्या और हिन्दी-दिवस

मेल्बर्न में, हर दूसरे महीने, पहले सप्ताह के शनिवार को 'साहित्य-संध्या' का आयोजन होता है। इस महीने, शनिवार, ५ सितम्बर को इस अवसर पर क्यू पुस्तकालय में हिन्दी दिवस मनाया गया।

कार्यक्रम के प्रथम चरण का संचालन प्रोफ़ेसर नलिन शारदा ने किया। डा० दिनेश श्रीवास्तव ने दीप प्रज्जवलित किया और अपने भाषण में भारतीय संस्कृति बनाये रखने के लिये हिन्दी की आवश्यकता पर बल दिया। उन्होंने बताया कि हिन्दी के सामने आज कई चुनौतियाँ हैं, दासता की प्रवृत्ति के कारण अँग्रेज़ी आज भी देश पर हावी है और बहुसंख्यक हिन्दी-भाषा का निरादर किया जा रहा है। इसके अतिरिक्त, हिन्दी को हिन्दुओं की और उर्दू को मुस्लिमों की भाषा बन कर, धार्मिक रूप से अनावश्यक भेद-भाव उत्पन्न किये जा रहे हैं और हिन्दी की उपभाषाओं (मैथिली, व्रज भाषा आदि) को हिन्दी से अलग भाषा सिद्ध करने के प्रयास हिन्दी के हित में नहीं हैं। उन्होंने यह भी बताया कि ऑस्ट्रेलिया में हिन्दी को मान्यता दिलाने के लिये किन-किन कठिनाइयों से गुज़रना पड़ा और कहा कि हम सबको मिल-जुल कर, हिन्दी के प्रचार-प्रसार में सहयोग देना चाहिये। उन्होंने प्रोफ़ेसर भागवत प्रसाद मिश्र 'नियाज़' के हिन्दी-प्रेम का उदाहरण दिया, जो आज ९२ वर्ष की आयु में भी हिन्दी-सेवा में रत हैं।

तत्पश्चात् डा० सुभाष शर्मा ने मधुर कंठ से मातृभाषा हिन्दी पर गीत गाया व हिन्दी दिवस के उपलक्ष्य में कविताएँ सुनाईं। मैंने एक हिन्दी ग़ज़ल सुनाई तथा 'बिखरा पड़ा है' - नवगीत का पाठ

-हरिहर झा, मेल्बर्न

किया। इस अवसर पर प्रोफ़ेसर भागवत प्रसाद मिश्र 'नियाज़' की पुत्री श्रीमती रीता मित्तल ने प्रोफ़ेसर मिश्र की एक हिन्दी कविता पढ़ी और पूजा मित्तल ने, प्रोफ़ेसर मिश्र की नवीनतम पुस्तक 'कन्टेम्परेरी हिन्दी पोयट्री' से दो हिन्दी कविताओं के अँग्रेज़ी अनुवाद पढ़े - जिन्हें लोगों ने काफ़ी पसंद किया।

श्री राजेन्द्र चोपड़ा ने रक्षा-बंधन के पर्व पर इस युग की मज़बूर परिस्थितियों की पृष्ठभूमि में भाई-बहन के प्रेम-भाव का हृदय-विदारक चित्र खींचा। प्रोफ़ेसर सुरेश भार्गव ने हास्य और करुण रस का अनोखा संगम प्रस्तुत किया जब एक सिपाही को कविता लिखने का शौक़ चर्राया।

दूसरे सत्र- 'अपने लोग, अपनी बातें' के संचालन का कार्य-भार मुझे सौंपा गया। मैंने फ़ादर कामिल बुल्के के हिन्दी-प्रेम, तुलसी-प्रेम व उनके हिन्दी-साहित्य में योगदान के बारे में बताया। रतन मूलचन्दानी जी ने कुछ चुटकुलों से हँसाने के पश्चात् 'अभिव्यक्ति' में प्रकाशित मुकेश पोपली की कहानी 'अपील' की विवेचना की तथा बताया कि किस तरह छोटे-छोटे प्रयास किसी ग़रीब की ज़िन्दगी बदलने में सहायक हो सकते हैं और हिन्दी भाषा के प्रचार-प्रसार में सहायक हो सकते हैं। सुमन जी ने एक जादूगर के माध्यम से आधुनिक युग की स्वार्थी प्रवृत्ति के कटु यथार्थ पर व्यंग्य किया। अनीता जी ने कहा कि भारत में जो विविधता में एकता दिखायी देती है, वह अन्यत्र दुर्लभ है और इस विषय में उन्होंने मातृभाषा की भूमिका को सराहा। सर्वेश कुमार सोनी की कविता के बाद हरि जुल्का जी ने एक जवाब के साथ सौ सवाल खड़े हो जाने की परिस्थिति का चित्रण किया। राजेश नाथन ने 'टू द साइलेंट ग्रेव' कविता सुनाई जिसके प्रत्युत्तर में मुझे अपनी एक कविता की दो पंक्तियाँ याद आ गयीं --

" काल ने विकराल सी खींची जो रेखा
है। मौत को निकट तक आते हुए देखा है।"

सुभाष शर्मा जी के धन्यवाद प्रस्ताव के साथ श्री गुरजिन्दर कौर ने देशप्रेम के गीत से कार्यक्रम का समापन किया।

लघु-कथा

वे अब नहीं आते

-इला प्रसाद, अमेरिका

दरवाज़े पर दस्तक हुई तो मैंने झाँक कर देखा। खिड़की के बाहर, ठीक लेटर-बाक्स के सामने एक काली कार खड़ी थी। मैंने रसोई में खाना बनाते हुए लक्ष्य किया था कि उस कार से दो व्यक्ति उतरे हैं। एक गोरा और दूसरा काला।

कंधे पर बैग और हाथ में कुछ पुस्तकें लिए। दिन रविवार का। समझते देर न लगी कि फ़िर किसी चर्च के धर्म प्रचारक अपने अभियान पर हैं। "जाएँ जूलिया के यहाँ" मैंने सोचा और नज़र हटा ली। जूलिया हमारी स्पैनिश पड़ोसन है। हर रविवार नियम से गिरजाघर जाती है। लेकिन वे एक बार फिर हमारे दरवाज़े पर थे। मैंने राकेश को पुकारा "देखना, कोई है।"

कम्प्यूटर-खेल में डूबे वे अक्सर ही अनसुना कर देते हैं और मैं झेलती हूँ। आज नहीं। मुझे जल्दी से काम ख़त्म कर बाहर निकलना है। उन पर असर हुआ। शायद मेरी खीझ भरी आवाज उन्होंने पहचान ली थी। उन्होंने जाकर दरवाज़ा खोला। अभिवादन के बाद आगन्तुकों ने अँग्रेज़ी में राकेश से उनका हाल-चाल पूछा।

राकेश ने भी अँग्रेज़ी में यह कहते हुए उत्तर दिया कि वे ठीक-ठाक हैं। फिर वे दरवाज़े से बाहर निकल गए।

आगे का वार्तालाप सुनना मेरे लिए असम्भव था। लेकिन समझ सकती थी, वे समझा रहे होंगे, हम इस चर्च से हैं। 'जीसस' तुम्हारे सारे पाप क्षमा करेगा। गिरजाघर में आया करो। इस लोक में चर्च तुम्हारी सहायता करेगा और परलोक में 'जीसस'। मैंने अपना ध्यान उधर से हटा कर कड़ाही पर लगाया, अभी भिंडी भुनी नहीं थी और फ़िलहाल यह काम ज़्यादा ज़रूरी था।

कुछ दस एक मिनट बीत गए। सब्जी के बाद जब कुकर ने दाल की सीटी भी दे दी तो समझ नहीं आया कि ये राकेश अभी तक कर क्या रहे हैं। उन्हें जल्दी से विदा क्यों नहीं करते, हम हिन्दू हैं कह कर। ऐसा ही तो ये करते हैं।

फिर कान लगाए,"हमारा धर्म कहता है कि सब धर्मों का सम्मान करो। सारे धर्म बराबर हैं।" वे कह रहे थे। मैं समझ गई, आज मूड में हैं। इन्हें मौका मिला है। अब फ़ुरसत से उन्हें पढ़ायेंगे। मैं मज़ा लेने लगी।

"तुम्हारे इतने सारे देवी-देवता हैं। हम एक ईश्वर में विश्वास करते हैं।"

"हम मानते हैं कि हर इंसान में ईश्वर है। और अच्छे काम करके हर व्यक्ति उस ऊँचाई तक पहुँच सकता है। जिसका जैसा विश्वास, उसका वैसा ईश्वर। वह एक ही है, उसके रूप अनेक हैं। जैसे तुम ब्रदर टाम हो और यह ब्रदर माइकल है। तुम दोनों मनुष्य हो।"

पादरी का धीरज शायद टूट चुका था। उसने उत्तेजित आवाज़ में अँग्रेज़ी में कहा - मैं क़सम खाकर कह सकता हूँ, ईसाई धर्म दुनिया का सबसे अच्छा धर्म है!

अगली आवाज़ राकेश की थी। वे कह रहे थे- मेरी पत्नी कहती है कि हम सब समुद्र के किनारे खेलते हुए बच्चे हैं और एक-दूसरे से झगड़ते हुए कहते हैं "मेरी माँ दुनिया में सबसे अच्छी है। क्या तुम उनमें से किसी एक को भी कह सकते हो कि वह ग़लत कह रहा/रही है?"

मैं चौंक गई। यह मैंने कई बार कहा है, जब भी धर्मों की बात हुई है लेकिन राकेश ने इसे याद रक्खा है!

हाँ, वह ठीक कहती है, उनका धीमा स्वर कानों में आया। हल्की, परास्त हँसी। फिर कमज़ोर क़दमों की दूर जाती हुई आवाज़।

राकेश विजेता की तरह दरवाज़ा बन्द कर अन्दर आ गए। हँसते हुए रसोई में घुसे "छवि,मैंने उन्हें भगा दिया। वे शायद अब नहीं आयेंगे।"

"मैं सुन चुकी हूँ" मैंने कहा।

हिन्दी-पुष्प की पाँचवीं वर्षगाँठ

हिन्दी-पुष्प की पाँचवीं वर्षगाँठ पर अनेकों बधाईयाँ। पाँच वर्ष पूरे कर के छठे वर्ष में प्रवेश करने के लिये अनेक शुभकामनाएँ। इस लम्बे सफ़र में हिन्दी-पुष्प ने न केवल मेल्बर्न में हिन्दी के प्रति जागरूकता लाने का प्रयास किया है, बल्कि स्थानीय कवियों, लेखकों एवं विद्यार्थियों को भी हिन्दी के प्रति प्रोत्साहित किया है। यद्यपि हिन्दी-पुष्प के पास केवल दो पृष्ठों की जगह है, पर इतने में ही यह समकालीन राजनैतिक, सामाजिक व मनोरंजन तथा साहित्यिक विषयों को प्रस्तुत करने का सफल प्रयास करता रहा है।

इस सफलता के लिए हम श्री दिनेश जी को विशेष धन्यवाद देना चाहते हैं जिनके अथक परिश्रम से ही हिन्दी-पुष्प इतनी सफलता प्राप्त कर सका है।

सफलतापूर्ण भविष्य के लिए हमारी शुभकामनायें।

सुधा-विजय - मेल्बर्न

महत्वपूर्ण तिथियाँ

शिक्षक-दिवस (५ सितम्बर), पितृ-दिवस-ऑस्ट्रेलिया (६ सितम्बर), हिन्दी-दिवस (१४ सितम्बर), नवरात्रि व दुर्गा-पूजा (१९-२७ सितम्बर), ईद (२० सितम्बर), दशहरा (२८ सितम्बर), दीपावली (१७ अक्टूबर)।

सूचनाएँ

१. **मित्र मंडली** प्रस्तुत करती है - **नवरात्रि २००९**
तिथि- शुक्रवार, १८ तथा २५ सितम्बर, शनिवार, १९ तथा २६ सितम्बर
स्थान - स्प्रिंगर्स लेज़र सेन्टर, ४०० चेल्टेनहम रोड, कीज़बरो, मेल्बर्न
आरम्भ समय - रात के ७.०० बजे से १२ बजे तक।
अधिक जानकारी के लिये ०४३० १२६ ९०९ अथवा ०४३०२९ ८०८१ पर फ़ोन करें।

२. **महफ़िल-नाइट** (शुक्रवार, १८ सितम्बर)
स्थान - कोबर्ग में लुइसा स्ट्रीट और विक्टोरिया स्ट्रीट के नुक्कड़ पर स्थित कोबर्ग पुस्तकालय हॉल।
समय- रात्रि के ८ बजे से १० बजे तक।
सभी संगीत प्रेमी आमंत्रित हैं। प्रवेश नि:शुल्क है।
अधिक जानकारी के लिये, डाक्टर शरतचन्द्रन को ९३६६-५४४ पर फ़ोन कीजिए।

३. **हिन्दी-निकेतन द्वारा आयोजित 'हिन्दी-दिवस'** (रविवार, २० सितम्बर)
स्थान - सिन्नामन क्लब, १२९१-१२९३ नेपियन हाईवे, चेल्टेनहम
समय - सुबह के ११ बजे से दोपहर के ३ बजे तक।
अधिक जानकारी के लिये चौधरी शमशेर सिंह को (फ़ोन न०- ९३३६-६९३९) अथवा
डा० शरद गुप्ता को (फ़ोन न०- ९७५३-३४१२) से सम्पर्क कीजिये

४. **जगजीत सिंह जी का ग़ज़ल-संगीत कार्यक्रम** (रविवार, २७ सितम्बर)
स्थान - मेल्बर्न टाउन हॉल, स्वांसटन स्ट्रीट,
आरम्भ समय - रात के ७.०० बजे से।
अधिक जानकारी के लिये हरचन्द कौर (फ़ोन न०- ०४१३९४८०८०) अथवा
अमित जोशी (फ़ोन न०- ०४१३१४९४०४) से सम्पर्क कीजिये

अब हँसने की बारी है

१. विदेशी चैनल और बिजली का ख़र्च

मोहन (सोहन से) - सोहन, तू टेलीविज़न पर हमेशा विदेशी चैनल ही क्यों देखता है?

सोहन (मोहन से) - यार, कुछ बिजली उनकी भी तो ख़र्च होनी चाहिये।

२. रेल का सफ़र

रमेश (सुरेश से) - यार, रात भर रेलगाड़ी में नींद नहीं आयी।

सुरेश (रमेश से) - तो सीट बदल लेते।

रमेश (सुरेश से) - किस से बदलता नीचे की सीट पर तो कोई था ही नहीं।